International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 120-124

श्रीलंका का आर्थिक संकट और भारत की भूमिका

चैनाराम*

सार

श्रीलंका भारत के दक्षिण में स्थित, हिंद महासागर में अवस्थित एक द्वीपीय देश है। 21 वीं सदी के तीसरे दशक के शुरूआत में एक गुलाब के फूल की भांति खिलखिलाते देश में अचानक आर्थिक संकट वैश्विक समाज के समक्ष एक चिंता का विषय नजर आने लगा। कम जनसंख्या वाला, अच्छी तरक्की करता राष्ट्र अचानक इस तरह फैल होने का मुख्य कारण आर्थिक कुप्रबंधन एवं लोकतंत्र में सस्ती लोकप्रियता की परिपाटी रही है। भारत चूँकि श्रीलंका का पडोसी एवं एशिया महाद्वीप में बिग बद्रर्स की भूमिका में है। यद्यपि 2010 के बाद श्रीलंका की चीन परस्त विदेश नीति के कारण दोनो देशों के मध्य संबंध अच्छे नहीं रहे है, फिर भी भारत के सामरिक एवं भू राजनीतिक हित श्रीलंका से है। अतः ऐसे संकट से श्रीलंका को उभारने के लिए भारत का सहयोग अपेक्षित था और भारत ने ऐसा किया भी है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य एक राष्ट्र राज्य के रूप में श्रीलंका के उदय के इतिहास एवं उसमें आये आर्थिक संकट के कारणों तथा आगे की राह का पता लगाकर भारत के साथ उसके सम्बन्धों का विश्लेषण करना है।

शब्दकोशः *राष्ट्र–राज्य, सीलोन, गृहयुद्ध, आर्थिक संकट, भू–राजनीतिक एवं सामरिक संबंध, हंबनटोटा।*

प्रस्तावना

भारत के दक्षिण पूर्व तट से लगे श्रीलंका एक मोती की आकृति लिए लगभग 65610 वर्ग किलोमीटर में हिन्द महासागर में विस्तृत एक द्वीपीय देश है। भारत ने केवल श्रीलंका का निकटतम है अपितु हर पहलू में एक महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली पड़ोसी भी है। श्रीलंका भी भारत की तरह डच, पुर्तगाली एवं बाद में अग्रेजों के अधीन रहा तथा एशिया में औपनिवेशीकरण के समय यह आइसलैंण्ड कंट्री तीन प्रांतों में विभाजित था साउथ में दो सिंहली तथा नार्दन में एक तमिल प्रान्त था। 1948 में विउनपिवेशीकरण के दौरान सिलोन को आजादी मिली तथा एक स्वतंत्र देश के रूप में अपना इतिहास शुरू किया। श्रीलंका की आबादी में 70 प्रतिशत सिंहली, 18 प्रतिशत तमिल एवं 10 प्रतिशत मुस्लिम है। चूंकि सिंहली समुदाय बहुसंख्या में थे अतः 1956 में सिंहली भाषा को राजभाषा बना दिया। सिंहली सरकारों की आर्थिक नीहत ढुलमुल रही प्राइमरी उत्पादन भी 1950 के बाद शुरू किया गया परन्तु यह देश ज्यादातर आयात पर ही निर्भर रहा। 1960 के दशक में आर्थिक संकट जैसे माहौल में मुद्रा कोष का दरवाजा खटखटाया तब देश पर थोपी जाने वाली शर्तो पर जनता की विपरित प्रतिक्रिया से बचने के लिए श्रीमावो भण्डारनायके ने समाजवाद की ओर रूख किया लेकिन 1970 में तेल संकट ने श्रीलंका के सामने फिर से संकट खड़ा कर दिया एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था कमजोर होने लगी। 1977 में जयवद्धने की सरकार बनी तब उदारीकरण करके मुद्रा कोष का दरवाजा फिर से देखने को मजबुर हुए। देश में गरीब जनता का ध्यान बंटाने के लिए उग्र राष्ट्रवाद का समय आया। सिहली बुद्धिस्ट राष्ट्रवाद की लहर से गृहयुद्ध के हालात पैदा हो गये। शुरू में तमिल समस्या तथा 2010 में इस समस्या की समाप्ति के बाद मुस्लिम आबादी को भी

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय बाँगड़ महाविद्यालय, डीडवाना, नागौर, राजस्थान।

तमिलों की भांति दबाने का प्रयास किया। 2019 में ईस्टर संडे सीरियल ब्लास्ट की घटना उग्र राष्ट्रवाद की ही प्रतिक्रिया थी। 2019 के बाद राजपक्षे सरकार ने बढते विदेशी कर्ज चुकि कर्ज मुद्रा कोष एवं अन्य देशों के साथ चीन का भी था जिसकी ब्याज दर बहुत ज्यादा थी। जनता को खुश करने के लिए चुनावों में पानी तरह पैसे बहाये और करों में कटौती करते हुए लोकलुभावन नीतियों का सहारा लिया परन्तु कोविड 19 महामारी से पर्यटन में आयी कमी ने अर्थव्यवस्था की हालत पतली कर दी। यही कारण रहा कि बढते कर्ज एवं घटते विदेशी मुद्रा भण्डार के कारण देखते ही देखते एक एक हरा भरा राष्ट्र 2022 में अचानक उजड़ा हुआ राष्ट्र के स्तर पर पहुंच गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि श्रीलंका इस बदहाली के स्तर तक कैसे पहुंचा तथा क्या भारत पड़ोसी प्रथम की नीति की प्राथमिकताओं पर अमल कर रहा है।

https://www.google.com

अध्ययन का उद्देश्य

भारत का पड़ोसी एवं भूसामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण देश श्रीलंका की वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्ष 2022 में श्रीलंका में आये राजनीतिक एवं आर्थिक संकट से न केवल श्रीलंका अपितु सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित हुआ है।

- एक राष्ट्रराज्य के रूप में श्रीलंका के उदय एवं उत्थान के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना।
- श्रीलंका में तमिल समस्या एवं गृहयुद्ध की स्थिति की समीक्षा करना।
- श्रीलंका आर्थिक एवं राजनीतिक संकट के कारणों का पता लगाना।
- श्रीलंका संकट एवं चीन की भूमिका का परीक्षण करना।
- संकट से उभरने एवं एक मजबूत राष्ट्र के रूप में दुनिया के नक्शे पर फिर से स्थापित होने के प्रयासों की जानकारी प्राप्त करना।
- भारत – श्रीलंका सम्बन्धो का अध्ययन करते हुए श्रीलंका के वर्तमान संकट के समाधान में भारत की भूमिका का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि एवं आंकड़ों का संकलन

हिन्द महासागर में अवस्थित एवं अपने भूसामरिक महत्व के कारण श्रीलंका न केवल एशिया महाद्वीप के देशों के लिए अपितु समुद्री मार्ग के कारण सम्पूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण बन जाता है। पाक जलडमरू एवं मन्नार की खाड़ी जैसे व्यापारिक एवं सामरिक महत्व के जलमार्ग इसी देश के पास से गुजरते है। सुंदर गुलाब के फूल की तरह खिलते भारत के इस पड़ोसी एशियाई देश का अपना बेजोड़ इतिहास एवं भूगोल रहा है। प्रस्तुत शोध श्रीलंका में गृहयुद्ध एवं उसके बाद उपजे आर्थिक संकट पर आधारित है। अध्ययन में श्रीलंका की वर्तमान हालातों के कारण एवं पड़ोसी पहले की भारत की नीति के संदर्भ में श्रीलंका में आर्थिक संकट के निवारण में भारत की भूमिका पर आधारित है। अध्ययन के लिए आंकाड़ों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीय दोनो प्रकार से स्रोतों से किया गया है। श्रीलंका में उपजे हालात का विविध माध्यमों से अवलोकन तथा उपलब्ध साहित्य, शोध पत्र– पत्रिकाओं एवं पूर्व में किए गए शोध अध्ययन के माध्यम से आंकड़ो का संकलन किया गया है।

साहित्य समीक्षा

शोध विषय की समग्र पृष्ठभूमि के विश्लेषण हेतु श्रीलंका के एक राष्ट्र राज्य के रूप में उत्थान एवं विकास तथा वर्तमान आर्थिक एवं राजनीतिक संकट से सम्बन्धित प्रकाशित पुस्तकें एंव पत्र– पत्रिकाओं का विवेचन किया गया है।

- **डॉ बी.एम. जैन** ने अपनी पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (2020) में श्रीलंका के उदय से लेकर गृहयुद्ध के अंत एवं भारत तथा चीन के प्रति उसके द्वारा अपनायी गयी नीति का उल्लेख किया है। हिन्द महासागर में श्रीलंका की अवस्थिति को लेखक ने भारत के लिए श्रीलंका का मजबूत राष्ट्र के रूप में बना रहना आवश्यक माना है। कोविड से तबाह श्रीलंका के पर्यटन उद्योग का भी विस्तृत वर्णन पुस्तक में दिया गया है।
- **प्रो. यू आर घई** ने अपनी पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति (2018) में भारत श्रीलंका सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए श्रीलंका में तमिल समस्या पर विस्तार से लिखा है। लेखक ने श्रीलंका में गृहयृद्ध का अंत एवं उसके बाद चीन परस्त नीति का उल्लेख करते हुए श्रीलंका में चीन के बढते विस्तार के बारे में संकेत किया है।
- **अभय नारायण राय** ने अपनी पुस्तक भारत श्रीलंका सम्बन्ध–राजीव गांधी काले के संदर्भ में (2010) 1980 के दशक में श्रीलंका में तमिल समस्या का उल्लेख करते हुए उसके समाधान में राजीव गांधी के प्रयासो विशेषकर कोलम्बों समझोता एवं शांति सेना के बारे में विस्तार से वर्णन किया है।
- **श्यामिका जयसुदंरा–स्मिट्स** की पुस्तक एन अनसीज हेगमोनी पॉलिटिक्स ऑफ स्टेट–बिल्डिग एंड स्ट्रगल्स फॉर जस्टिस इन श्रीलंका (2022) में उत्तर औपनिवेशिक श्रीलंका के राजनीतिक विकास का विस्तार से वर्णन किया है। श्रीलंका के वर्तमान संकट को को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि का विस्तार से उल्लेख है।
- **आकाश चौधरी** ने दृष्टि सीरीज द अनफोल्डिंग क्राइसिस इन श्रीलंका (2022) में श्रीलंका के आर्थिक संकट एवं भारत की प्रतिक्रिया का उल्लेख करते हुए उन कारणों का वर्णन किया है जिससे श्रीलंका में बदहाली की स्थिति पैदा हुई तथा भारत के पड़ोसी देश के नाते भारत द्वारा श्रीलंका की सहायता एवं एक मजबूत राष्ट्र के लिए अपनायी जाने वाली नीति का उल्लेख किया है।

श्रीलंका के आर्थिक संकट का विश्लेषण

किसी देश का तंत्र पूरी तरह फैल हो जाये तथा अव्यवस्था चरम स्तर पर पहुंच जाये तथा सरकार के मंत्रियों को जनता से बचने के लिए इधर उधर भागना पड़े तब पता चलता है संकट कितना गहरा था। यही दशा श्रीलंका की 2022 के शुरूआत में हुई तब एक परिवार से शासित देश के प्रधानमंत्री को मालद्वीप भागना पड़ा वहीं राष्ट्रपति भवन पर जनता का कब्जा और देश में आपातकाल यह सब घटनाएं यह सिद्ध करने के लिए काफी है कि श्रीलंका आर्थिक एवं इससे उपजे राजनीतिक संकट में बूरी तरह फंस गया था। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए रानिल विक्रमसिंघे के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय सरकार का गठन किया गया। भारत से एक वर्ष बाद ही अंग्रेजो से आजाद होने वाला देश श्रीलंका 21 वी सदी में जहां मानव विकास सूचकांक में अचछा प्रदर्शन कर रहा था तथा उसकी स्थिति भारत से भी इस मामले में बेहतर थी फिर ऐसा क्या हुआ कि श्रीलंका की गिनती अचानक कंगाल देशों में होने लगी। 2022 में श्रीलंका में आये आर्थिक संकट ने सम्पूर्ण विश्व को इस ओर सोचने पर मजबुर कर दिया की एक गुलाब के फूल की तरह खिलता राष्ट्र अचानक बदहाली के स्तर पर कैसे पहुंच गया। ऐसी स्थिति विश्व के कुछ देशों में पूर्व के वर्षों में देखने को मिली थी जिनमें रूस में 1998, 2008 में आइसलैण्ड, 2017 में वेनेजुएला तथा 2020 में अर्जेटीना प्रमुख है। परन्तु श्रीलंका आर्थिक की अपेक्षा राजनीतिक कारणों से ज्यादा बदहाल हुआ है।

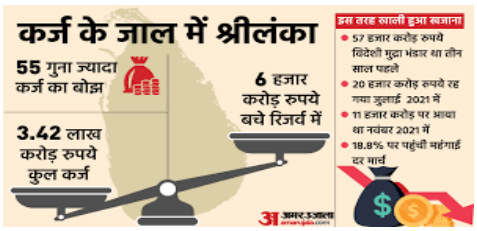

file:///C:/Users/pc/Downloads/sri-lanka-economic-crisis-

- सरकार की आर्थिक नीतियां, सरकार पर एक ही परिवार का लम्बें समय तक शासन पर कब्जा तथा गृहयुद्ध की समाप्ति के बाद सरकार द्वारा 2010 से ही चीन से भारी मात्रा में कर्ज तथा भ्रष्ट्राचार एवं सता में बने रहने की लालसा से थोथी घोषणा एवं बंदरबांट की नीति से श्रीलंका को एकाएक गर्त में धकेलने का काम किया। श्रीलंका पर कर्ज का बोझ बढता जा रहा था परन्तु सरकार ने उत्पादकता व्यवस्था ने आर्थिक संकट को आमंत्रित कर दिया।
- व्यापार संतुलन भी घाटे में चला गया क्योंकि वस्तु एवं सेवा का आयात बढा उस अनुपात में निर्यात नहीं हुआ।
- राष्ट्रीय आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने से बजट की कमी साफ देखी गयी। सरकार विदेश से आवश्यक वस्तु एवं सेवा खरीदने में असमर्थ हो गयी।
- कोविड 19 एवं उसी समय ईस्टर संडे को सीरियल ब्लाट से श्रीलंका में उपजा अशांति के माहौल से विदेशी पर्यअन पर विपरित प्रभाव डाला।
- सरकार ने 2019 में लोकलुभावन राजनीति एवं सस्ती लोकप्रियता के चक्कर में जीएसटी दर में कमी कर दी जिससे राजस्व प्राप्ति में कमी आ गयी। कोविड 2019 ने पर्यटन से होने वाली आय को भी खत्म कर दिया। क्योंकि श्रीलंका के राजस्व में पर्यटन का योगदान बहुत ज्यादा था परन्तु महामारी से विदेशी पर्यटक आये नहीं ऐसे में विदेशी मुद्रा प्राप्ति में संकट आया ओर धीरे धीरे विदेशी मुद्रा भण्डार कम होने लगा।
- गिरटी क्रेडिट रेटिंग से विदेशी निवेश एवं ऋण की प्राप्ति को असंभव बना दिया। अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी बाजार से बाहर कर दिया अब श्रीलंका ने कॉमर्शियल लॉन की ओर देखना शुरू किया जिसकी ब्याज दर बहुत ज्यादा होती है। विदेशी मुद्रा भण्डार विदेशी ऋण के ब्याज भरने में भी कम प्रतीत होने लगा तब आर्थिक संकट अवश्यम्भावी बन गया।
- रासायनिक उर्वरक के आयात पर प्रतिबंध से कृषि सेक्टर यानी चावल एवं चाय उत्पादन पर विपरित प्रभाव पड़ा। सरकार को बाद में अपना आदेश पुनः लेना पड़ा।
- बढ़ते विदेशी कर्ज के कारण अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करना पड़ा जिससे कर्ज पर ब्याज ओर बढ़ गया।

भारत की भूमिका

भारत – श्रीलंका के बीच संबंध बहुत प्राचीन है। दोनों देश एशिया महाद्वीप में अवस्थिति है तथा भारत श्रीलंका का एक मात्र पड़ोसी देश है। दोनो ही देश आजादी लगभग एक ही वर्ष के अंतराल पर पायी तथा दोनो देशों में घनिष्ट संबंध रहे है परन्तु तमिल समस्या के कारण दोनो देशों के संबंधों में टकराव भी रहा इसके

साथ ही एशिया महाद्वीप में भारत की बिग बद्रर्स की स्थिति के कारण पड़ौसी देश भारत की बजाय चीन एवं अन्य महाशक्तियों की ओर संबंध बनाने में भी नहीं चुकते है फिर भी भारत की नीति हमेशा पड़ोसी प्रथम की रही है इसी कारण श्रीलंका के आर्थिक संकट में भारत ही वह पहला देश था जिसने लंका की सहायता के लिए हाथ बढाया। भारत ने फरवरी 2022 में निर्यात एवं आयात को सरल करते हुए सरल कर्ज का कार्य किया। श्रीलंका को 500 मि. की क्रेडिट लाइन तथा 1500000 टन से अधिक जेट विमान ईधन, डीजल और पेट्रोल की सहायता दी। भोजन, दवा, आवश्यक वस्तुओं के लिए 1 बिलियन लाइन ऑफ क्रेडिट तथा 100 बिलियन करेंसी स्वेप और श्रीलंका के सेंट्रल बैंक के बकाया भुगतान को टाल दिया गया। इस सहायता से श्रीलंका को राहत का अनुभव हुआ तथा एक राष्ट्र राज्य के रूप में फिर से स्थापित एवं मजबूत होने का अवसर।

निष्कर्ष

एशिया महाद्वीप में सामरिक एवं भू राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण देश श्रीलंका 2022 में अचानक आर्थिक दृष्टि से बेपटरी होने से अव्यवस्था एवं अराजकता की स्थिति में आ गया परन्तु शासकों की गलत नीतियों एवं राष्ट्र में चीन परक नीतियों की वजह से बढ़ता कर्ज लंका को यह यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि अचानक लोकतंत्र के स्थान पर आर्थिक समुद्धि का चीनी मॉडल राष्ट्र के विकास के अनुकूल नहीं है। चीन कई विकसशील देशों को इसी तरह अपने झाल में फंसाकर बर्बाद कर चुका है। भारत के लिए श्रीलंका न केवल पड़ोसी अपितु तमिल समुदाय के कारण हमेशा सुदृढ संबंधें के लिए जरूरी देश रहा है। भारत ने संकट में न केवल तुंरत राहत प्रदान की अपितु एक मजबूज राष्ट्र के रूप में फिर से स्थापित करने का वचन भी दिया। भारत अपनी सॉफ्ट पॉर डिप्लोमेसी द्वारा 2009 से श्रीलंका के चीन परस्त नीति से संबंधों में आयी खटास को कम कर सकता है अपितु संबंध बेहतर भी कर सकता है यह एक स्वर्णिम अवसर है। भारत का निवेश ऐसी परिस्थितियों में फिर से बढाया जा सकता है। चीन के श्रीलंका एवं हिन्द महासागर में बढते प्रभाव को कम करने के लिए श्रीलंका से बेहतर संबंध बनाना जरूरी भी है। यदि श्रीलंका में संकट बढा तब वहां के लोग भारत के तटीय क्षेत्र में पलायन को विवश होगे ऐसे में श्रीलंका को मजबूत राष्ट्र बनाना भारत के लिए लाभकारी होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जैन, बी.एम (2020) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. घई, यू आर (2018) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कंपनी, जालधंर
3. राय, अभय नारायण (2010) भारत श्रीलंका सम्बन्ध–राजीव गांधी काल के संदर्भ में, पी.एल. मिडिया।
4. स्मिट्स, श्यामिका जयसुदंरा (2022) एन अनसीज हेगमोनी पॉलिटिक्स ऑफ स्टेट–बिल्डिग एंड स्ट्रगल्स फॉर जस्टिस इन श्रीलंका, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस।
5. दत्त,पी.वी. (2003) बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली।
6. तिवारी, ओमप्रकाश (2006) राष्ट्रीय सुरक्षा, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. चौधरी, आकाश (2022) द अनफोल्डिंग क्राइसिस इन श्रीलंका, दृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. सुब्रमण्यम, नीरूपमा (2015) आधुनिक युग में श्रीलंकाः एक इतिहास, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
9. इण्डिया टुडे एवं केरेंट अफेयर्स पत्रिका 2022
10. द हिन्दू, अमर उजाला एवं राजस्थान पत्रिका रिपोर्ट 2022

❖◆❖